सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन-एक चुनौती के रूप में

सविता पाण्डेय

शोध छात्रा,

महात्मा ज्योतिबा फूले रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय,

बरेली।

सारांश

सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन का मुख्य उद्देश्य शिक्षा को बालकेन्द्रित एवं भयमुक्त बनाना है। सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण अंग है। सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में शिक्षकों एवं विद्यार्थियों की मदद करता है। मूल्यांकन एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है। मूल्यांकन से विद्यार्थियों की अध्ययन की आदतों तथा शिक्षण विधियों पर बहुत प्रभाव पड़ता है। 6 मार्च 2014 में टाइम्स ऑफ इण्डिया में एक लेख छपा था जिसका शीर्षक था ''CCE has improved scores not teaching'' इस लेख में सी0बी0एस0सी0 के तात्कालिक चेयरपर्सन श्री विनीत जोशी से जो बातचीत इस मुद्दे से सम्बन्धित हुई थी वह भी प्रकाशित हुआ था संक्षेप में वह वार्तालाप इस प्रकार था ''Shift in teaching methodology still a challenge'' इस लेख से कई सारे प्रश्न उठते है जैसे - बहुत सारे प्रयास करने के बावजूद शिक्षण कार्य में कोई सराहनीय विकास नहीं हो पा रहा है? या सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन क्यों एक चुनौती के रूप में बना हुआ है? या क्या शिक्षकों की शैक्षिक प्रवृति इसमें अपनी कोई भूमिका निभा रही है। इस शोध पत्र में इन प्रश्नों का उत्तर पता लगाने का प्रयास किया गया है।

संकेत शब्दः- सतत् मूल्यांकन, व्यापक मूल्यांकन एवं चुनौतियां।

प्रस्तावनाः- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 के अनुसार ''एक अच्छी मूल्यांकन और परीक्षा पद्धति सीखने की प्रक्रिया का अभिन्न अंग बन सकती है जिसमें विद्यार्थी और शिक्षा तंत्र दोनों को ही विवेचनात्मक और आलोचनात्मक फीडबैक का फायदा हो सकता है।'' इन्हीं सब बातों को ध्यान में रखते हुये राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 द्वारा सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन को पूरी आत्मा के साथ लागू करने की वकालत की गई। भारत के मानव संसाधन विकास मंत्रालय और केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड ने विद्यालय शिक्षा के क्षेत्र में सुधार करने के लिए सितंबर 2009 में यह घोषित किया कि सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन को मुद्दा बनाया जाएगा और सभी सम्बन्धित विद्यालयों में यह लागू किया जायेगा। सी0बी0एस0ई0 ने अक्टूबर 2009 में प्रशिक्षक-प्रशिक्षण फार्मेट में कार्यशालाओं के माध्यम से देश भर में सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन का प्रशिक्षण देना शुरू किया। सतत् एवं व्यापक

मूल्यांकन का मुख्य उद्देश्य शिक्षा को बाल-केन्द्रित बनाना तथा रटने की प्रकृति को समाप्त करना है।

सतत् एवं व्यापक मूल्यांकनः- सतत् तथा व्यापक मूल्यांकन भारत के स्कूलों में मूल्यांकन के लिये एक नीति के रूप में 2009 में शुरू किया गया। शिक्षा के अधिकार के परिप्रेक्ष्य में इसकी आवश्यकता महसूस की गयी थी। मूल्यांकन की यह प्रक्रिया सभी राज्य सरकारों के परीक्षा-बोर्डों तथा केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा आरम्भ की गयी है। इस पद्धति द्वारा कक्षा 6 से लेकर कक्षा 10 तक के छात्रों का मूल्यांकन किया जाता है। सी0बी0एस0सी0 ने 2010 से कक्षा 9 तथा 2011 से कक्षा 10 की बोर्ड परीक्षाओं में अंकों के स्थान पर ग्रेडिंग सिस्टम को लागू कर दिया।

मूल्यांकन का अर्थ सिर्फ यह मानना नहीं है कि सीखना कहाँ तक हुआ है बल्कि पूरे तंत्र को फिर से संरचित करना है। इसे स्वाभाविक रूप से निगमनात्मक होना चाहिए जिससे शिक्षार्थियों के कमियों को उपचारात्मक शिक्षण के द्वारा दूर किया जा सके। ज्यादातर यह प्रकृति से योगात्मक प्रकार का होता है और बच्चे के विकास का एक बैध वापस माना जाता है। मूल्यांकन एक निश्चित समय पर बच्चे की उपलब्धि का मापन करता है। सतत् एवं व्यापक मूल्याकंन का यह अर्थ नहीं है कि शिक्षार्थियों की रोजाना परीक्षा ली जाए। सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन का वास्तविक आशय कक्षा में छात्रों की भागीदारी और प्रगति पर सतत् नजर रखना है। छात्रों को सीखने में आ रही कठिनाई को पहचानना और समय रहते इस कठिनाई को दूर करना भी इस प्रक्रिया का एक बहुत महत्वपूर्ण भाग है। सतत् मूल्यांकन शिक्षकों के लिए भी है जिससे वह यह जॉच करे कि उनका शिक्षण कार्य कितना प्रभावी है और जरूरत पड़ने पर अपने शिक्षण प्रक्रिया में सुधार करने हेतु कदम उठाएं। सतत् मूल्यांकन में शिक्षकों से यह अपेक्षा की जाती है कि वह छात्रों ने कितना सीखा है को वर्ष के अंत में एक साथ जॉचने कि अपेक्षा लगातार कक्षा के दौरान विद्यार्थियों का आंकलन कर उन्हें सीखने में सहयोग करें।

व्यापक मूल्यांकन का अर्थ यह है कि छात्रों के हर पक्ष का आंकलन किया जाय एवं छात्रों के प्रत्येक पक्ष जैसे नैतिक, सामाजिक, शारीरिक, भावात्मक आदि विकास की जानकारी प्राप्त की जाए। शिक्षा का उद्देश्य केवल पाठ्य सामग्री को तैयार करना तथा उससे सम्बन्धित कौशलों का विकास करना मात्र नहीं है, बल्कि उनका हर तरफ से सर्वांगिण विकास करना है। इसके लिए आवश्यक है कि बच्चों के शारीरिक विकास, अनुशासन, नियमित उपस्थिति, नेतृत्त क्षमता, सृजनात्मकता आदि व्यक्तिगत एवं सामाजिक गुणों के क्रमिक विकास का सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन किया जाता रहे।

सतत् और व्यापक मूल्यांकन शैक्षिक और सह-शैक्षिक दोनों पहलुओं पर विचार करता है। शैक्षिक मूल्यांकन में शैक्षिक पहलुओं में पाठयक्रम संबंधी विषय शामिल होते है। ये क्षेत्र लेखन और वाचन कौशल में सुधार के लिये मौखिक और लिखित परीक्षण, चक्रीय परीक्षण, गतिविधि परीक्षण और सभी विषयों के दैनिक कक्षा कार्य पर ध्यान केन्द्रित करते है। शैक्षिक मूल्यांकन रचनात्मक और योगात्मक दोनों प्रकार का होना चाहिये।

सतत् और व्यापक मूल्यांकन तथा विभिन्न शिक्षा आयोग- विभिन्न शिक्षा आयोगों ने समय-समय पर सतत् और व्यापक मूल्यांकन को स्कूल स्तर पर आवश्यक बताया है। ये आयोग परीक्षाओं की गुणवत्ता को बनाये रखने सम्बन्धी कई सुझाव दिये है। माध्यमिक शिक्षा आयोग (मुदालियर आयोग 1952-54) ने अपना सुझाव दिया कि ''छात्रों का अंतिम मूल्यांकन सिर्फ वाह्य परीक्षाओं पर आधारित नहीं होना चाहिए, और दूसरी चीज यह है कि आंतरिक मूल्यांकन और छात्र से संबंधित स्कूल रिकार्ड बनाने की जिम्मेदारी शिक्षक की होनी चाहिए। शिक्षक को आंतरिक तथा वाह्य दोनो तरह का मूल्यांकन करके छात्र से संबंधित पूरे वर्ष की गतिविधि को अपने ध्यान में रखकर उसका मूल्यांकन करना चाहिये। ''कोठारी कमीशन (1964-66) ने आंतरिक मूल्यांकन की महत्ता को रेखांकित करते हुए कहा है कि- ''स्कूलों द्वारा लिया जाने वाला आंतरिक मूल्यांकन व्यापक होना चाहिये।'' राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में भी यह यह विचार प्रस्तुत किया गया है कि- ''मूल्यांकन एक सतत् तथा व्यापक प्रक्रिया है मूल्यांकन का अर्थ बच्चों को उसकी सफलता-असफलता का प्रमाण पत्र देना नहीं है, बल्कि उसकी योग्यता को बढावा व सही दिशा देना है।'' इसके लिए आवश्यक है कि बच्चों का सतत् आंकलन किया जाय जिससे यह पता चल सके कि बच्चे के विकास की गति ठीक है या नहीं, यदि सही नहीं है तो उसे किस प्रकार के वाह्य मदद की आवश्यकता है?

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या 2005 में भी भयभीत कर देने वाली इस मूल्यांकन प्रक्रिया को लेकर गंभीर चिन्ताएं व्यक्त करते हुए हल सुझाए गये है। शिक्षा के अधिकार अधिनियम 2009 में भी परीक्षा के भय और तनाव को दूर करने के लिये कक्षा 5वीं और 8वीं की बोर्ड परीक्षा को समाप्त कर सतत् और व्यापक मूल्यांकन को अनिवार्य किया गया है।

सतत् और व्यापक मूल्यांकन की आवश्यकता- स्कूल आधारित मूल्यांकन में विद्यार्थियों का मूल्यांकन करते समय उनके सभी पक्षों शैक्षिक गतिविधियों से लेकर उनके सम्पूर्ण विकास के लिये आवश्यक हर गतिविधियों में उनका क्या योगदान है इन सबका ध्यान रखा जाना चाहिए। सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन की आवश्यकता निम्न प्रकार महसूस की गई है-

- यह शैक्षिक एवं गैर शैक्षिक दोनों प्रकार का मूल्यांकन करता है।
- विद्यार्थियों की कमजोरी को पहचानकर उसका निदान बताया जा सकता है।
- उपलब्धि स्तर को निरन्तर बनाये रखने व ऊचा उठाने के लिए प्रेरित करता है।
- उपचारात्मक शिक्षण विधि का प्रयोग कर विद्यार्थियों की समस्याओं को दूर किया जाता है।
- शिक्षार्थियों के लिए प्रेरणा का कार्य करता है ताकि अधिगम प्रक्रिया में रूचि उत्पन्न हो सके।
- शिक्षकों को सही कार्य नीति बनाने में मदद करता है।
- विद्यालय व्यवस्था की जाँच करता है।
- शिक्षार्थियों के सर्वांगीण विकास पर बल देता है।
- निरन्तर मूल्यांकन होते रहने से शिक्षार्थियों में परीक्षा का अनावश्यक भय नहीं होता है।

शिक्षकों द्वारा सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन को लागू करते समय आने वाली समस्यायें – शिक्षकों द्वारा सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन को लागू करते समय निम्न समस्याओं का सामना करना पड़ता है–

- छात्रों द्वारा लापरवाही बरतना।
- कक्षा का आकार (छात्रों की संख्या) का अधिक होना।
- शिक्षकों द्वारा रिकार्ड को बनाकर रखना बड़ा ही कठिन कार्य है।
- सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन (CCE) के प्रति छात्र की प्रवृति।
- संसाधनों की कमी।
- छात्र स्नेह प्रभावी रूप से भागीदार नहीं बन पाते है।
- सतत् और व्यापक मूल्यांकन (CCE) में मूल्यांकन या जॉच का जो क्रम है उसके लिये सही तरीके से प्रशिक्षण की कमी।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची–

- शर्मा, आर0ए0 : 1993, मापन एवं मूल्यांकन, ईगल बुक्स, बी0सी0 बाजार, मेरठ।
- शर्मा, कुसुम : 2000, एटीटयूड ऑफ टीचर्स टूवर्डस कंटिन्यूअस कोम्प्रीहेसिव इवैल्यूएशन, स्कोलर्स रिसर्च जर्नल फॉर इंटरडिसीप्लिनरी स्टडीज, जुलाई-अगस्त, वाल्यूम 1, पृ0 1570-1585।
- राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिसद 2006
- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005
- राणा, सुरेंदर सिह, 2015, टीचर्स एटीटयूडस टूवर्डस कंटिन्यूअस कोम्प्रीहेसिव इवैल्यूएशन, इण्डियन जर्नल ऑफ अप्लाइड रिसर्च वाल्यूम 5, अंक 7, पृ0 412-414
- गुप्ता, एस0पी0, 2008, आधुनिक मापन एवं मूल्याकंन, शारदा पुस्तक भवन, युनिवर्सिटी रोड, इलाहाबाद।
- द प्राइमरी टीचर्स, वॉल्यूम xxxx, अंक 2 और 3 अप्रैल एण्ड जुलाई 2015।
- भारतीय आधुनिक शिक्षा, वर्ष 39, अंक 2, अक्तूबर 2018
- अग्रवाल ममता 2015, एग्जामिनेशन रिफॉर्म इनिशिएटिव इन इण्डिया।